

कोरोना महामारी: एक प्राकृतिक आपदा

भरत गिरी गोसाई¹, सरिता²

¹ सहायक प्राध्यापक, शहीद श्रीमती हंसा धनाई राजकीय महाविद्यालय अगरोड़ा, टिहरी गढ़वाल, उत्तराखंड, भारत

² सहायक प्राध्यापिका, भारत सिंह रावत राजकीय महाविद्यालय, पौड़ी गढ़वाल, उत्तराखंड, भारत

सारांश

कोरोना एक विषाणु जनित रोग है, जिसको कोविड-19 के नाम से भी जाना जाता है। कोरोना एक महामारी के रूप में जन्म ले चुका है, जिसने वर्तमान में 205 से अधिक देशों में लगभग 01 करोड़ 33 लाख (आंकड़े 17 जुलाई 2020 तक) से भी ज्यादा मरीजों में अपनी पहुंच बनाकर वैश्विक अर्थव्यवस्था एवं स्वास्थ्य सेवाओं को बौना साबित करके एक प्राकृतिक आपदा के रूप में भयंकर तबाही मचा रखी है। कोरोना की प्रभाव से लगभग 6 लाख लोग काल के गाल में समा चुके हैं, लगभग 8 लाख लोग (आंकड़े 17 जुलाई 2020 तक) इस महामारी से अभी तक ठीक भी हुए हैं।

मूल शब्द: कोरोना, महामारी, पर्यावरण, आपदा, विषाणु

प्रस्तावना: कोरोना विषाणु की उत्पत्ति

कोरोना विषाणु की उत्पत्ति चीन के वुहान शहर से दिसंबर 2019 में निमोनिया जैसी बीमारियों के लक्षण वाले रोग की तरह सामने आयी। ऐसा माना जाता है कि चीन की सीफूड नामक बाजार से चमगादड़ के सूप पीने से यह विषाणु मानव शरीर में पहुंचा और संक्रमित मानव से अन्य लोगों में यह वायरस तेजी से फैला। कोरोना बीमारी की प्रमुख लक्षणों में सूखी खांसी बुखार गले में दर्द कमजोरी चक्कर आना प्रमुख है। यह बीमारी संक्रमित व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति में फैलता है।

कोरोना संक्रमण के प्रमुख लक्षण

कोरोना संक्रमण के प्रमुख लक्षणों में सूखी खांसी, बुखार, गले में दर्द, कमजोरी, चक्कर आना प्रमुख है। यह बीमारी संक्रमित व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति में फैलता है।

कोरोना संक्रमण से बचाव के उपाय

कोरोना महामारी से बचाव हेतु हमें सरकार द्वारा समय-समय पर दिए जा रहे दिशा निर्देशों का गंभीरता पूर्वक पालन करना चाहिए। बार-बार अपने हाथ 20 सेकंड के लिए साबुन व पानी से धोएं, खांसते समय टिशू या कपड़े का इस्तेमाल करना चाहिए। अगर आपके पास टिशू नहीं है, तो अपने बाजू का भी प्रयोग कर सकते हैं। हाथ बिना धोए अपने आंख, नाक, या मुंह को न छुएं। सामाजिक दूरी का पालन करते हुए मास्क का प्रयोग अनिवार्य रूप से करें। हाथ मिलाने की जगह नमस्ते का प्रयोग करें। अफवाह ना फैलाएं ना फैलाने दें। जिन्हें खुद के संक्रमित होने का शक है, उनके लिए निम्नलिखित सलाह स्वास्थ्य विभाग द्वारा जारी की गई हैं।

प्रथम कदम: डॉक्टर, फार्मसी या अस्पताल जाने से बचें।

द्वितीय कदम: अपने इलाके में मौजूद स्वास्थ्य कर्मों से फोन पर या ऑनलाइन माध्यम से जानकारी लें।

तृतीय कदम: सामाजिक दूरी का पालन करते हुए मास्क का प्रयोग जरूर करें।

चतुर्थ कदम: जरूरत पड़ने पर डॉक्टर, नर्स द्वारा आपकी जांच की जाएगी।

पंचम कदम: 14 दिन का होम क्वारंटाइन जरूरी है।

कोरोना महामारी से बचाव ही एकमात्र साधन है। अतः में केंद्र और राज्य सरकार द्वारा दी जा रही दिशा निर्देशों का पालन करना चाहिए। कोरोना वायरस में उच्च संक्रमणता है, लेकिन मृत्यु दर 2 से 3% ही हैं, जो कि सार्स महामारी की मृत्यु दर (10%) से बहुत कम है। अतः हमें घबराने की जरूरत नहीं है, संयम से सावधानीपूर्वक इस महामारी से जीता जा सकता है।

मानव जाति पर कोरोना विषाणु का प्रभाव

कोरोना विषाणु मुख्यतः मानव शरीर की श्वसन प्रणाली को प्रभावित करता है। यह छोटी उम्र के बच्चों (10 साल से कम) तथा बुजुर्गों (60 साल से अधिक) को सबसे ज्यादा प्रभावित करता है। विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यू0 एच0 ओ0) की एक अध्ययन के अनुसार 6% लोग इस वायरस के कारण गंभीर रूप से बीमार हुईं, इनमें फेफड़े फेल होना, सेप्टिक शॉक ऑर्गन फेल होना प्रमुख है। 14% लोगों में संक्रमण के लक्षण देखे गए इनमें सांस लेने की दिक्कत हो रही थी। लगभग 80% लोगों में संक्रमण के मामूली लक्षण दिखे जैसे बुखार खांसी आदि। न्यूयॉर्क सिटी हेल्थ द्वारा 13 मई 2020 तक उपलब्ध आंकड़ों के अनुसार महिलाओं की अपेक्षा पुरुषों में कोरोना वायरस के कारण संक्रमण एवं मृत्यु दर अधिक है।

सारणी संख्या 1: कोरोना वायरस का पुरुषों एवं महिलाओं में प्रभाव

लिंग	कोरोना के कारण मौतों का हिस्सा (प्रतिशत में)
पुरुष	61.8%
महिला	38.2%

न्यूयॉर्क सिटी हेल्थ द्वारा 13 मई 2020 तक उपलब्ध आंकड़ों के अनुसार 75 वर्ष से अधिक आयु वर्ग में कोरोना वायरस का सर्वाधिक प्रभाव पड़ा है।

सारणी संख्या 2: कोरोना संक्रमण का विभिन्न आयु वर्ग में प्रभाव

आयु वर्ग (वर्षों में)	मौतों का हिस्सा (प्रतिशत में)
0 से 17	0.06 %
18 से 44	3.90 %
45 से 64	22.4 %
65 से 74	24.9 %
75 से अधिक	48.7 %

एक रिपोर्ट के अनुसार जो व्यक्ति पहले से किसी बीमारी से जूझ रहा हो, तो कोविड-19 का सर्वाधिक प्रभाव उस व्यक्ति पर पड़ेगा। पूर्व से हृदय रोग से पीड़ित मरीजों को कोरोना संक्रमण के कारण होने वाली मृत्यु दर सर्वाधिक है।

सारणी संख्या 3: पूर्व में अन्य बीमारी से संक्रमित व्यक्तियों पर कोरोना का प्रभाव

पूर्ण मौजूदा बीमारी	कोरोना संक्रमण के बाद मृत्यु दर (प्रतिशत में)
हृदय रोग	13.2 %
मधुमेह	9.2%
उच्च रक्तचाप	8.4%
सांस की बीमारी	8.0%
कैंसर	7.6%

कोरोना वैश्विक संक्रमण की बात करें तो लगभग हर देश इस महामारी से जूझ रहा है। चीन के बाद अमेरिका, इटली, फ्रांस, स्पेन, भारत सहित समस्त विकसित एवं विकासशील देशों में कोरोना का प्रसार बहुत तेजी से हो रहा है। स्वास्थ्य सेवाओं में प्रथम स्थान रखने वाले संयुक्त राष्ट्र अमेरिका में कोरोना से होने वाली मृत्यु का सिलसिला लगातार बढ़ती जा

रहा है, जोकि चिंता का विषय है।

18 जुलाई 2020 के अनुसार सर्वाधिक कोरोना मरीजों की संख्या में भारत चौथे स्थान पर है। शुद्ध वातावरण अच्छा खानपान आदि के कारण भारत में कोरोना वायरस से संक्रमित मरीजों के ठीक होने की दर अन्य विकसित देशों की तुलना में अच्छी है।

सारणी संख्या 4: विभिन्न देशों में कोरोना संक्रमित एवं कोरोना से हुई मौतों की संख्या

देश	संक्रमितों की संख्या	मृत्यु
अमेरिका	34 लाख 31 हजार	1 लाख 36 हजार
ब्राजील	19 लाख 26 हजार	74 हजार 602
भारत	10 लाख 40 हजार	25 हजार 511
रूस	7 लाख 38 हजार	11 हजार
ब्रिटेन	2 लाख 92 हजार	45 हजार

विश्व स्वास्थ्य संगठन के महानिदेशक डॉ० टेड्रोस अधानोम गेब्रेयेसस ने 11 मार्च 2020 को कोरोना बीमारी को वैश्विक महामारी घोषित किया। किसी बीमारी की महामारी होने की घोषणा उसके कारण होने वाली मौतों एवं पीड़ितों की संख्या पर निर्भर करता है। वर्ष 2009 में स्वाइन फ्लू को महामारी घोषित किया गया था, इस जानलेवा बीमारी के चलते करीब 2 लाख लोगों की मृत्यु हुई थी।

महामारी होने की अधिक संभावना तब होती है, जब वायरस बिल्कुल नया हो और आसानी से लोगों को संक्रमित कर रहा है। कोरोना वायरस इन सभी पैमानों को पूरा करता है, इसलिए 114 देशों में इस वायरस के फैलने के उपरांत महामारी घोषित किया गया। दुनिया में कोरोना द्वारा प्रथम मौत 5 जनवरी 2020 को वुहान शहर चीन में हुई। 30 जनवरी 2020 को भारत में केरला में कोरोना का प्रथम मरीज की पुष्टि हुई। भारत में कोरोना द्वारा प्रथम मृत्यु उत्तर प्रदेश के नोएडा में पुष्टि हुई। उत्तराखंड राज्य में 15 मार्च 2020 को पहला कोरोना मरीज की पुष्टि हुई, तथा 1 मई 2020 को उत्तराखंड में उपचार के दौरान प्रथम कोरोना पीड़ित ने दम तोड़ा।

भारत में कोरोना के मरीज दिन प्रतिदिन बढ़ती जा रहे हैं। धीरे-धीरे रिकवरी रेट में भी कमी आ रही है। 30 जनवरी 2020 को भारत में प्रथम कोरोना मरीज की पुष्टि हुई थी, और 17 जुलाई 2020 को भारत में कोरोना संक्रमितों की संख्या 10 लाख से अधिक पहुंच चुकी है, जो की चिंता का विषय है।

सारणी संख्या 5: भारत में कोरोना संक्रमित मरीजों की संख्या

दिवस	संक्रमितों की संख्या	कुल दिवस
जनवरी 30	01	-
अप्रैल 14	11518	73
अप्रैल 22	20491	08
अप्रैल 28	30507	06
मई 3	40598	06
मई 6	50026	03
मई 19	100826	13
जून 3	202350	15
जून 13	311529	10
जून 17	405169	04
जून 27	506299	10
जुलाई 2	605410	05
जुलाई 7	714631	05
जुलाई 11	817500	04
जुलाई 14	904573	03
जुलाई 17	1003301	03

कोरोना महामारी को रोकने के लिए किए गए प्रयास:

कोरोना जैसी घातक बीमारी से बचाव हेतु प्रत्येक देश द्वारा भरसक प्रयास किए जा रहे हैं। सभी देशों द्वारा अपने स्तर पर इस महामारी से बचाव हेतु लगे हुए हैं, किंतु अभी तक स्थाई समाधान जैसे वैक्सीन, दवाइयां नहीं बन सकी। इस दिशा में लगातार कार्य चल रही है, संभव जल्दी हमें सफलता भी मिल जाएगी। भारत में प्लाज्मा थेरेपी विधि द्वारा भी कोरोना से पीड़ित मरीजों का सफल इलाज किया जा रहा है।

भारत सरकार द्वारा भी संक्रमण को रोकने के लिए व्यापक इंतजाम, प्रचार-प्रसार किए जा रहे हैं। इस महामारी से निपटने के लिए भारत सरकार द्वारा 20 लाख करोड़ की घोषणा की गई है, जो कि भारत की जीडीपी का 10% है। इसका प्रयोग किसानों, मजदूरों की स्थिति को सुधारने में किया जाएगा। भारत के प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी द्वारा 22 मार्च को सुबह 7:00 बजे से रात 9:00 बजे तक जनता कर्फ्यू का पालन कराया गया। यह जनता के लिए जनता द्वारा खुद पर लगाए गए कर्फ्यू था। इसके अलावा पूरे देश में निम्न चरणों में लॉकडाउन लगाया गया:-

प्रथम चरण: 25 मार्च 2020 से 14 अप्रैल 2020 (21 दिन)

द्वितीय चरण: 15 अप्रैल 2020 से 3 मई 2020 (19 दिन)

तृतीय चरण: 4 मई 2020 से 17 मई 2020 (14 दिन)

चतुर्थ चरण: 18 मई 2020 से 31 मई 2020 (14 दिन)

प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने ऐलान किया कि लॉकडाउन के दौरान लोग घरों पर रहे, बाजार पूरी तरह से बंद रहेंगे, केवल जरूरत के सामानों की दुकानों को खोलने की अनुमति दी गई थी। जहां तक संभव हो वर्क फ्रॉम होम की आदत को सुनिश्चित करें, कार्यस्थल सार्वजनिक स्थानों को सेनीटाइज करते रहे।

मोदी सरकार द्वारा 1 जून 2020 को अनलॉक-1 को लेकर गाइडलाइंस जारी की गई जो कि 30 जून 2020 तक प्रभावी था, फिर 1 जुलाई 2020 से लेकर 31 जुलाई 2020 तक अनलॉक-2 की घोषणा की गई। इस दौरान देश में सभी चीजों को चरणबद्ध तरीके से खोला जाएगा, राज्य अपने मूल्यांकन के मुताबिक पाबंदियां लगा सकते हैं।

भारत सरकार द्वारा कोरोना वायरस के संक्रमण को रोकने के लिए किए जा रही बेहतर कार्यों की अन्य देशों द्वारा सहारना किया जा रहा है, जिसके परिणाम स्वरूप भारत सरकार के केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्री डॉ० हर्षवर्धन को विश्व स्वास्थ्य संगठन का कार्यकारी निदेशक बनाया गया।

कोरोना महामारी का सकारात्मक प्रभाव

जहां तक कोरोना का सकारात्मक प्रभाव की बात की जाए तो, इस महामारी NAI जीवन जीने के तरीके तथा पारिवारिक मूल्यों को फिर से परिभाषित कर दिया है। लॉकडाउन के दौरान हमें अपने परिवार के साथ समय बिताने का मौका मिला, वही जो लोग खाना बनाने की शौकीन है, यूट्यूब के माध्यम से खाना बनाना सीख रहे हैं। साथ ही साथ ऑनलाइन माध्यम से शिक्षकों द्वारा शिक्षण कार्य भी किया जा रहा है, ताकि विद्यार्थियों की शिक्षा में कोई रुकावट ना आए। पुरानी सीरियलों का दौर फिर से वापस आ गया है, जिसका लाभ पूरा परिवार एक साथ बैठकर ले रहे हैं। रिश्ते में कड़वाहट घट रहे हैं। कोरोना में लोग अपने शौक को भी पूरा कर रहे हैं, साथ ही साथ अपने हुनर को भी निखार रहे हैं। डांस सीखना, म्यूजिक, पेंटिंग, लेखन कार्य, अनुसंधान कार्य लॉकडाउन के दौरान वापस आ रहे हैं। प्रकृति की बात करें तो प्रदूषण में बहुत कमी आई है। अमेरिका के न्यूयॉर्क शहर में प्रदूषण 50% तक कम हो रहा है, चीन में भी 25% कार्बन डाइऑक्साइड का उत्सर्जन में कमी आई है। यूरोप की सेटेलाइट तस्वीरें यह बताती हैं कि इटली में डाई ऑक्साइड उत्सर्जन में कमी आई है। ब्रिटेन आदि देशों में भी पर्यावरण पर लॉकडाउन का सकारात्मक प्रभाव देखा जा सकता है। आज मानव अपने घरों में कैद हैं, और जीव-जंतु, पक्षियों प्रकृति में स्वतंत्र रूप से विचरण करते देखा जा सकते हैं। दूर से हिमालय पर्वत दिखाई दे रहा है, चिड़ियों की चहचहाहट आंगन में वापस सुनाई दे रही है, नदियों का पानी स्वच्छता की ओर अग्रसर हो रहे हैं। सरकार द्वारा हजारों करोड़ों खर्च करके भी जो काम नहीं हो पाया लॉकडाउन के दिनों में वो काम प्रकृति ने मुफ्त में कर दिखाया है। इसलिए प्रकृति को श्रेष्ठ माना गया है।

कोरोना का नकारात्मक प्रभाव

लॉकडाउन के कारण मजदूरों को बहुत नुकसान हुआ है। वे मजदूर जो रोजमर्रा के कार्य करके अपना व परिवार का भरण पोषण करते थे, उनके सामने आज रोजी रोटी का विकट संकट पैदा हो गया है। देश की अर्थव्यवस्था को गंभीर नुकसान हुआ है। अर्थव्यवस्था की रीढ़ कहीं जाने वाली संयुक्त राष्ट्र अमेरिका भी इससे अछूता नहीं रहा। वर्ष 2019-

20 में अमेरिका सहित अन्य विकसित देशों की अर्थव्यवस्था के 2 से 7% तक रहने का अनुमान है। विश्व बैंक ने भारत की अर्थव्यवस्था वर्ष 2019-20 के लिए 5% तथा 2020-21 के लिए 2 से 5% अंकित की गई, जो की चिंता का विषय है। दिन रात सिर्फ कोरोना से संबंधित खबरों से लोगों में नकारात्मक प्रभाव पड़ रहा है। लोग डिप्रेशन जैसी गंभीर समस्याओं से भी जूझ रहे हैं, पूरे दिन घर में रहने से स्वास्थ्य संबंधित अनेक बीमारियां भी बढ़ती जा रही हैं।

संदर्भ सूची

1. आज तक- दिल्ली के प्रदूषण के संबंध में प्रकाशित ऑनलाइन जानकारी
2. www.indiawaterportal.org - पर्यावरण के प्रति जागरूकता और हमारा भविष्य
3. www.scottbuz.org - पर्यावरण एवं पर्यावरण के बारे में संक्षिप्त विवेचना
4. www.economicstime.com- कोरोना काल में लॉक डाउन का पर्यावरण पर प्रभाव
5. www.who.int
6. www.india.org.in
7. www.bbc.com- कोरोना का प्रभाव
8. www.amarujala.com- कोरोनावायरस के लक्षण क्या है और कैसे करें बचाव
9. मनीष अवस्थी- कोविड-19 जैव विविधता संरक्षण: हमारे समाधान प्रकृति में, इंटरनेशनल जनरल ऑफ हिंदी रिसर्च, 6(4) 2020
10. भरत गिरी गोसाई एवं सरिता- कोविड-19 का पर्यावरण पर प्रभाव
11. शिखा बनर्जी- भारतीय समाज पर कोविड-19 वैश्विक महामारी का मनोवैज्ञानिक प्रभाव समाधान समाधान, इंटरनेशनल जनरल ऑफ हिंदी रिसर्च, 6(4) 2020
12. न्यूयॉर्क सिटी हेल्थ द्वारा उपलब्ध आंकड़े